प्रकृति और संस्कृति से विकसित भारत की परिकल्पना

भारत को समझने का एक नया दृष्टिकोण : भूगोल, लोकज्ञान, विज्ञान और संस्कृति के समन्वय से विकसित राष्ट्र की ओर

क्या भारत को केवल राज्यों और जिलों के मानचित्र से समझा जा सकता है? या भारत की वास्तविक पहचान उसकी नदियों, पर्वतों, जंगलों, मिट्टी, जलवायु, कृषि, लोकपरंपराओं और जनजीवन में भी छिपी है?

इन्हीं महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर खोजने का एक अभिनव प्रयास है पुस्तक **'प्रकृति और संस्कृति से विकसित भारत की परिकल्पना'**, जो भारत को एक जीवंत भू-सांस्कृतिक सभ्यता के रूप में समझने का नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

यह पुस्तक केवल पर्यावरण संरक्षण की चर्चा नहीं करती, बल्कि भारत के प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक विरासत, स्थानीय अर्थव्यवस्था, पारंपरिक ज्ञान, आधुनिक विज्ञान और सतत विकास के बीच गहरे संबंधों को सामने लाती है। इसका मूल संदेश अत्यंत सारगर्भित है—

"धरती बचेगी तो समाज बचेगा; समाज बचेगा तो संस्कृति बचेगी।"

भारत के विकास को देखने का एक नया नजरिया

वर्तमान समय में भारत जलवायु परिवर्तन, जल-संकट, भूमि-अवनयन, जैव-विविधता के क्षरण, प्रदूषण, हिमनदों में बदलाव तथा प्राकृतिक आपदाओं जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन समस्याओं का समाधान केवल तकनीकी अथवा प्रशासनिक उपायों से संभव नहीं है। इसके लिए स्थानीय परिस्थितियों, जनभागीदारी, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान का समन्वय आवश्यक है।

पुस्तक इसी सोच के आधार पर भारत को समझने के लिए तीन परस्पर जुड़े भौगोलिक एवं सांस्कृतिक स्तर प्रस्तुत करती है—

15 कृषि-जलवायवीय क्षेत्र → 50 भौगोलिक-भौतिक इकाइयाँ → 86 भू-सांस्कृतिक क्षेत्र।

इनका उद्देश्य भारत की विविधता को एक क्रमबद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझना है।

- **15 कृषि-जलवायवीय क्षेत्र** वर्षा, तापमान, जलवायु और कृषि की व्यापक परिस्थितियों को समझने का आधार प्रदान करते हैं।
- **50 भौगोलिक-भौतिक इकाइयाँ** पर्वत, मैदान, पठार, घाटियाँ, मरुस्थल और तटीय क्षेत्रों की प्राकृतिक संरचना को सामने लाती हैं।
- **86 भू-सांस्कृतिक क्षेत्र** इन प्राकृतिक परिस्थितियों को स्थानीय भाषा, भोजन, कृषि-पद्धति, आजीविका, लोकपरंपरा, सामाजिक व्यवहार और सामुदायिक ज्ञान से जोड़ते हैं।

यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि ये 86 क्षेत्र राज्यों अथवा जिलों की प्रशासनिक सीमाओं को बदलने का प्रस्ताव नहीं हैं, बल्कि भारत के विविध प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिदृश्यों को समझने का एक पूरक अध्ययन-ढाँचा हैं।

सात आयामों में भारत की प्रकृति और संस्कृति का अध्ययन

पुस्तक की एक विशेष उपलब्धि यह है कि यह भारत के भू-सांस्कृतिक स्वरूप को सात महत्वपूर्ण आयामों से जोड़कर समझाती है—

1. **धरती माता एवं भू-विज्ञान** – भूमि, मिट्टी, पर्वत, पठार और भौगोलिक संरचनाओं का महत्व।
2. **जल ब्रह्म एवं जल-विज्ञान** – नदियों, जलस्रोतों, जलागम क्षेत्रों और पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणालियों की भूमिका।
3. **खेती से संस्कृति** – कृषि, स्थानीय खाद्य परंपराओं, बीजों और ग्रामीण जीवन का परस्पर संबंध।
4. **स्थानीय अर्थव्यवस्था** – प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित आजीविका, ग्रामीण रोजगार और आत्मनिर्भरता।
5. **पारिस्थितिकी एवं जैव-विविधता** – वनस्पतियों, जीव-जंतुओं और प्राकृतिक संतुलन का संरक्षण।
6. **जलवायु और बदलता भारत** – वैश्विक तापवृद्धि, जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम और अनुकूलन की चुनौतियाँ।
7. **संस्कृति** – लोकज्ञान, भाषा, परंपराएँ, सामाजिक व्यवहार और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भारतीय जीवन-दृष्टि।

इस प्रकार पुस्तक भूगोल को संस्कृति से, संस्कृति को आजीविका से और आजीविका को पर्यावरणीय संरक्षण से जोड़ती है।

जल संरक्षण से राष्ट्रीय विकास तक : अनुभवों पर आधारित विचार

पुस्तक के प्रमुख आधारों में जलपुरुष डॉ. राजेंद्र सिंह का दशकों का सामुदायिक जल-संरक्षण अनुभव भी शामिल है। तरुण भारत संघ के माध्यम से राजस्थान के अलवर क्षेत्र में जोहड़ों, तालाबों और बावड़ियों के पुनर्जीवन तथा जनभागीदारी आधारित जल-प्रबंधन के प्रयासों ने जल संरक्षण और ग्रामीण विकास के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित किया है।

यह अनुभव बताता है कि जल संरक्षण केवल सरकारी योजनाओं का विषय नहीं, बल्कि स्थानीय समाज की सक्रिय भागीदारी से जुड़ा हुआ कार्य है।

पुस्तक इसी अनुभव को भारत के विभिन्न भू-सांस्कृतिक क्षेत्रों में लागू होने वाली एक विचार-दिशा के रूप में प्रस्तुत करती है। साथ ही यह बताती है कि उपग्रह, GIS, रिमोट सेंसिंग, डिजिटल मानचित्रण, वैज्ञानिक मॉडलिंग और आधुनिक तकनीक स्थानीय ज्ञान के दस्तावेजीकरण तथा संसाधनों के बेहतर प्रबंधन में किस प्रकार सहायक हो सकती हैं।

UPSC अभ्यर्थियों और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी पूरक अध्ययन सामग्री

आज सिविल सेवा परीक्षाओं में केवल तथ्यों का ज्ञान पर्याप्त नहीं है। भारत की भौगोलिक विविधता, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरणीय चुनौतियों, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और विकास नीतियों को एकीकृत दृष्टिकोण से समझना भी आवश्यक है।

इस दृष्टि से यह पुस्तक UPSC तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए एक उपयोगी पूरक संदर्भ सामग्री बन सकती है।

इसके विषयों का संबंध विशेष रूप से निम्नलिखित अध्ययन क्षेत्रों से है—

- **सामान्य अध्ययन पेपर-I:** भारतीय भूगोल, भौतिक संरचना, क्षेत्रीय विविधता, समाज और सांस्कृतिक विरासत।
- **सामान्य अध्ययन पेपर-II:** स्थानीय स्वशासन, सामुदायिक भागीदारी, विकेंद्रीकृत नियोजन और विकास प्रशासन।
- **सामान्य अध्ययन पेपर-III:** पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, कृषि, जल संसाधन, जैव-विविधता, नवीकरणीय ऊर्जा और आपदा प्रबंधन।
- **निबंध एवं समसामयिक विषय:** सतत विकास, प्रकृति और मानव का संबंध, आत्मनिर्भर भारत, ग्रामीण विकास तथा भारतीय ज्ञान परंपरा।

विशेष रूप से 15 → 50 → 86 का भू-सांस्कृतिक ढाँचा अभ्यर्थियों को भारत की क्षेत्रीय विविधता और स्थानीय स्तर पर विकास की आवश्यकताओं को समझने में सहायता कर सकता है।

यह पुस्तक निर्धारित UPSC पाठ्यक्रम अथवा मानक पाठ्यपुस्तकों का विकल्प नहीं है, बल्कि उनके अध्ययन को अधिक व्यापक, व्यावहारिक और उदाहरण-आधारित बनाने वाली पूरक सामग्री के रूप में देखी जानी चाहिए। UPSC द्वारा इसकी किसी औपचारिक अनुशंसा अथवा स्वीकृति का दावा नहीं किया जा रहा है।

सनातन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का रचनात्मक समन्वय

इस पुस्तक का एक महत्वपूर्ण पक्ष भारतीय सनातन परंपराओं में निहित प्रकृति-सम्मान की भावना को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ना है। धरती को माता, जल को जीवन और प्रकृति को मानव सभ्यता का आधार मानने वाली भारतीय विचारधारा को पुस्तक पर्यावरणीय जिम्मेदारी और समकालीन विकास की आवश्यकताओं के संदर्भ में प्रस्तुत करती है।

इसमें अतीत की परंपराओं की ओर मात्र लौटने का आग्रह नहीं है, बल्कि पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच सार्थक संवाद स्थापित करने की बात कही गई है।

राष्ट्रीय विमर्श और जनभागीदारी की पहल

इस विचारधारा को व्यापक राष्ट्रीय विमर्श का स्वरूप देने के लिए 15–16 नवम्बर 2025 को भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA), नई दिल्ली में विचार-मंथन कार्यशाला तथा 11–13 सितम्बर 2026 को हरिजन सेवक संघ, नई दिल्ली में तीन दिवसीय भू-सांस्कृतिक विचार-गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से 200 से अधिक किसानों, जल-संरक्षकों, महिलाओं, युवाओं, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

13 सितम्बर 2026 को जारी जन-घोषणापत्र में 86 भू-सांस्कृतिक क्षेत्रों की अवधारणा को गाँवों, पंचायतों, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों तक पहुँचाने, स्थानीय ज्ञान को जीवित ज्ञान-संपदा के रूप में पहचान देने तथा जल-जंगल-जमीन के संरक्षण में जनभागीदारी बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया गया।

चार विशेषज्ञों का सामूहिक बौद्धिक प्रयास

इस पुस्तक के लेखक हैं—

- **डॉ. राजेंद्र सिंह (जलपुरुष):** जल संरक्षण, नदी पुनर्जीवन और सामुदायिक विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित पर्यावरणविद् एवं तरुण भारत संघ के अध्यक्ष।

- **प्रो. (डॉ.) भरत राज सिंह:** पर्यावरणविद् एवं महानिदेशक (तकनीकी), स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ; वैज्ञानिक अनुसंधान, पर्यावरण संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा और तकनीकी विकास के क्षेत्र में सक्रिय व विश्वस्तरीय पहचान ।
- **डॉ. इंदिरा खुराना:** पर्यावरणविद् एवं भारतीय हिमालयी नदी बेसिन परिषद की अध्यक्ष; जलवायु परिवर्तन, जल संसाधन और ग्रामीण आजीविका के विषयों की विशेषज्ञ।
- **प्रो. (डॉ.) राणा प्रताप सिंह:** पर्यावरण वैज्ञानिक एवं पूर्व प्रोफेसर, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ; जल एवं वायु प्रदूषण, जैव-उपचार और पर्यावरणीय स्थिरता के विशेषज्ञ।

चारों विशेषज्ञों के अनुभव और दृष्टिकोण इस पुस्तक को सामाजिक, वैज्ञानिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक विमर्श का साझा मंच प्रदान करते हैं।

विकसित भारत के लिए एक विचारोत्तेजक अध्ययन

भारत का भविष्य केवल आर्थिक विकास दर, औद्योगिक विस्तार और भौतिक अवसंरचना से निर्धारित नहीं होगा। इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा, सामाजिक सहभागिता, सांस्कृतिक निरंतरता, स्थानीय अर्थव्यवस्था और आने वाली पीढ़ियों के अधिकारों को भी समान महत्व देना होगा।

पुस्तक का संदेश है कि विकास का ऐसा मॉडल अपनाया जाए जिसमें प्रकृति का दोहन नहीं, बल्कि उसका पुनर्जीवन हो; स्थानीय समुदाय केवल योजनाओं के लाभार्थी नहीं, बल्कि निर्णय और क्रियान्वयन के सक्रिय भागीदार बनें।

भूगोल को समझिए, संस्कृति का सम्मान कीजिए और स्थानीय ज्ञान से प्रकृति का संरक्षण कीजिए—यही विकसित भारत की स्थायी नींव है।

यह पुस्तक UPSC अभ्यर्थियों, विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं, नीति-निर्माताओं, पर्यावरणविदों और सामान्य नागरिकों के लिए भारत को एक नए दृष्टिकोण से समझने का आमंत्रण है।

पुस्तक विवरण

- **शीर्षक:** प्रकृति और संस्कृति से विकसित भारत की परिकल्पना
- **उपशीर्षक:** भारतीय भू-सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित—सनातन एवं आधुनिक विकास की एक पहल

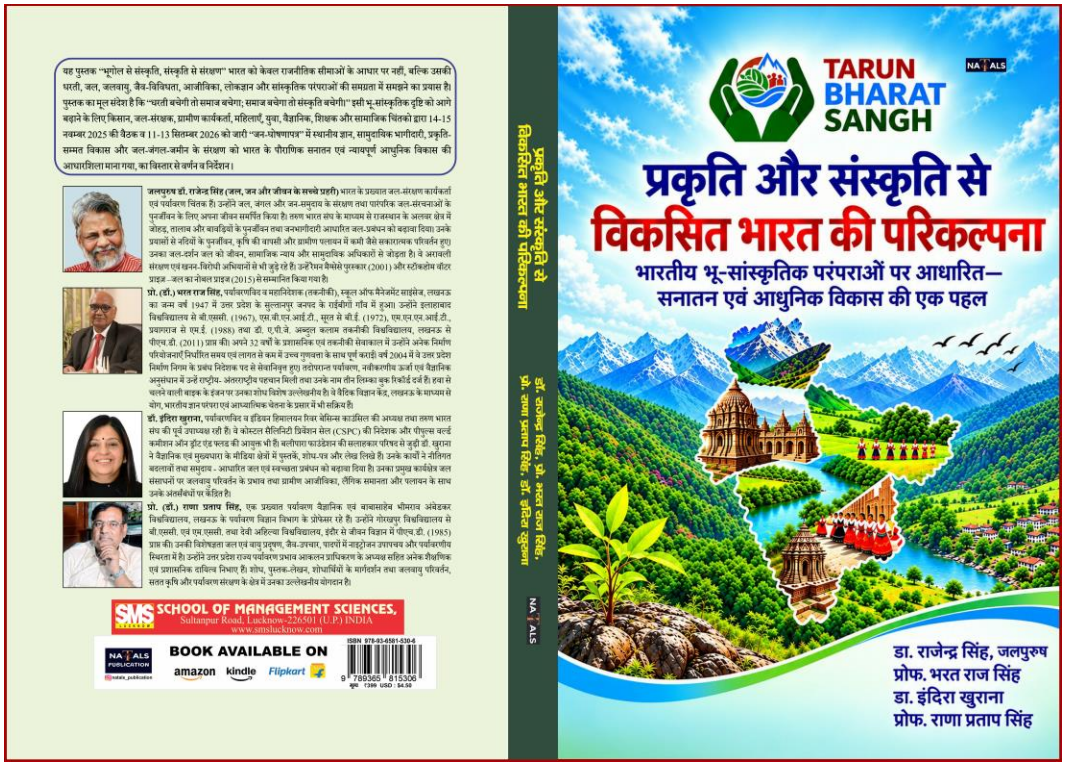
- **लेखक:** डॉ. राजेंद्र सिंह, प्रो. (डॉ.) भरत राज सिंह, डॉ. इंदिरा खुराना एवं प्रो. (डॉ.) राणा प्रताप सिंह
- **प्रकाशक:** Natals Publication, नई दिल्ली
- **प्रथम संस्करण:** नवम्बर 2026
- **ISBN:** 978-93-6581-530-6
- **मूल्य:** ₹399
- **उपलब्धता:** Natals Publication तथा Amazon, Kindle एवं अन्य उपलब्ध पुस्तक-विक्रय माध्यमों पर।

एक पुस्तक, अनेक दृष्टिकोण—भारत की प्रकृति, संस्कृति और भविष्य को समझने की एक नई पहल।

पुस्तक का विमोचन अभी हाल ही में अमेरिका के न्यू-यॉर्क व हॉस्टन शहर में क्रमशः दिनांक 16 नवम्बर व 18 नवम्बर 2026

नोट: मीडिया के लिए विशेष सलाह: शीर्षक में UPSC का उल्लेख इस रूप में करना अधिक उचित होगा— *"UPSC अभ्यर्थियों के लिए उपयोगी पूरक संदर्भ पुस्तक"*। इसे UPSC द्वारा स्वीकृत या अनुशंसित पुस्तक तभी लिखें जब ऐसी कोई आधिकारिक पुष्टि उपलब्ध हो।
इस सामग्री का मीडिया, समाचार-पत्र, पुस्तक प्रचार, विश्वविद्यालयों और UPSC अभ्यर्थियों के अध्ययन समूहों में साझा किया जा सकता है।

PHOTOS



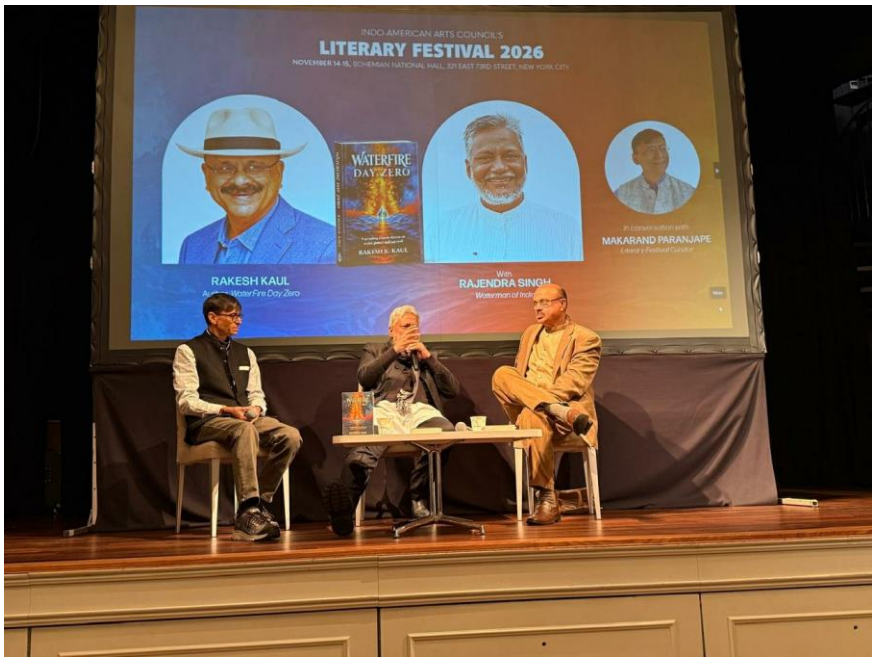


Fig 1: New York, USA-01



Fig 2: New York, USA-02

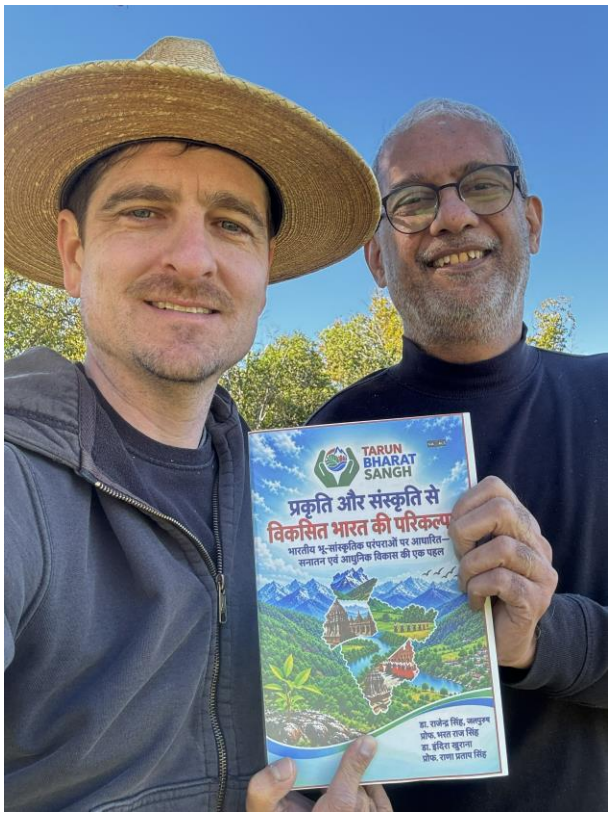


Fig 3: Houston, USA-01

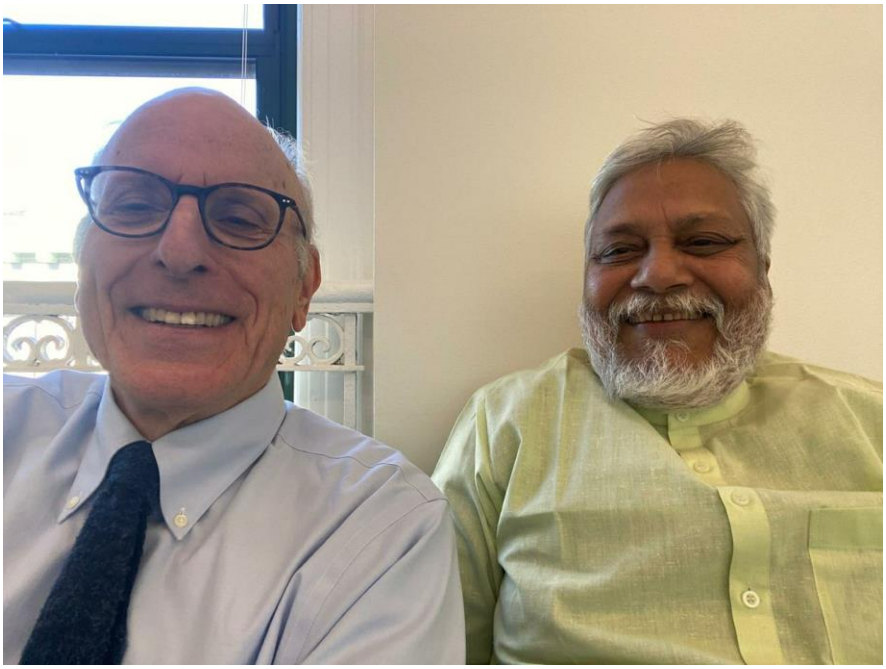


Fig 4: Houston, USA-02



Fig 5: Houston, USA-03